>

Title: Problems of handloom weavers of Uttar Pradesh.

श्री पन्ना लाल पुनिया (बाराबंकी): सभापति जी, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे बुनकर समाज की समस्याओं पर सरकार का ध्यान आकर्षित करने का अवसर प्रदान किया। आज बुनकर समाज बदहाली व आर्थिक तंगी से गुजर रहा है जिससे अनेक लोग आत्महत्या भी कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश में कभी अपने हुनर के बल पर मऊ भारत का मैनचैस्टर कहलाता था। टांडा, अकबरपुर, बाराबंकी, जैतपुर, पिलखवा जैसे प्रमुख बुनकर केन्द्र हैं, लेकिन आज जिस तंगी से लोग गुजर रहे हैं, उसकी भयावह तस्वीर दिखने लगी है। हालात से न लड़ने के कारण वे मौत को गले लगाने पर मजबूर हैं। उत्तर प्रदेश के अकेले मऊ में सिर्फ पिछले दो महीने में पांच बुनकरों ने आत्महत्या की है और अनेक ने प्रयास भी किए हैं। भदोही जो वुलन कारपेट के लिए अंतर्राष्ट्रीय मार्किट कहलाता है, वहां भी आर्थिक तंगी के कारण दो बुनकरों ने आत्महत्या कर ली है। ...(व्यवधान) उत्तर प्रदेश में मऊ बुनकर बाहुल्य क्षेत्र है तथा इसके अलावा वहां मुहम्मदाबाद, गोहना, घोसी, कोपागंज, अदरी, चिरैयाकोट आदि कस्बों में बुनकरों की संख्या की बहुतायत है। अकबरपुर, टांडा, जैतपुर, बाराबंकी, पिलखवा भी बुनकर बाहुल्य क्षेत्र हैं। 80 और 90 के दशक में मुस्लिम बुनकरों की सम्पन्नता को देख अन्य समुदाय के लोग भी इस पेशे से जुड़ गए। गांव-गांव में पावरलूमों की स्थापना होने लगी। लोगों को लगने लगा था कि बुनाई उद्योग विकसित होकर प्रदेश का आर्थिक परिदृश्य बदल देगा। लेकिन महज कुछ ही वर्षों में हालात इस कदर खराब हो गये हैं कि वे भी आज आर्थिक मंदी में फंस गये। इस आर्थिक मंदी ने कई लोगों की जिंदगी की राह बदल दी। कुछ ने धंधे बदल लिए और कुछ बेकारी की हालत में जिंदगी की जंग हारने लगे।

इस भयावह स्थिति से निपटने तथा बुनकरों के कल्याण के लिए अत्यंत गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है। मैं सरकार को सुझाव देना चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश के बुनकर बाहुल्य क्षेत्र में साड़ी बोर्ड का गठन किया जाये, क्योंकि इस क्षेत्र की साड़ियों की डिमांड देश के विभिन्न हिस्सों से लेकर विदेशों तक है। उत्तर प्रदेश के बुनकर आज भी परम्परागत तरीके से बुनाई करते हैं और वे भी आधुनिक तकनीक का प्रयोग करने को आतुर हैं, लेकिन आर्थिक तंगी के कारण यह संभव नहीं है। इन्हें सरकार की मदद की सख्त आवश्यकता है। सूत निर्यात हो जाने के कारण सूत महंगा हो गया है। महंगे सूत से उनका पड़ता नहीं बैठता है। निर्यात भी बुरी तरह बाधित हो गया है। ...(व्यवधान)

श्री दारा सिंह चौहान : आप भारत सरकार से मांग कीजिए। ...(व्यवधान)

श्री पन्ना लाल पुनिया : आप बैठिये, समस्या पर विचार हो रहा है और आपको खुजली हो रही है। ...(व्यवधान) बिजली की उपलब्धता नगण्य है, उत्पादन ठप्प है। वे न बिजली का बिल जमा करने की स्थिति में हैं और न ही बैंक का कर्जा अदा करने की स्थिति में हैं। किसानों का कर्ज माफी की तर्ज पर बुनकरों के पुराने बैंक लोन तथा पुराने बिजली देयों को माफ किया जाना चाहिए। अति पिछड़े तथा बुनकरों के लिए सरकारी नौकरी में अलग से आरक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे बुनकर समाज सम्मान का जीवन व्यतीत कर सकें। धन्यवाद